Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

20/1/2018

बुंदेलखंड की मिट्टी बनेगी सेहतमंद, बढ़ेगा उत्पादन

भारतीय कृषि अनुसंधान ने दी कृषि विश्वविद्यालय को जिम्मेदारी, अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना में वैज्ञानिक करेंगे अनुसंधान, सूक्ष्म पोषक तत्वों की खोज करेंगे

प्रशांत शर्मा

झांसी।

बुंदेलखंड की मिट्टी को सुक्ष्म पोषक तत्वों की खोज करके सेहतमंद बनाया जाएगा, इसके लिए रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान (आईसीआर) से अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की मंजूरी मिल गई है। इसके तहत वैज्ञानिक खोज करके मिट्टी में पोषक तत्वों को पूरा कर तिलहन, दलहन की फसलों का उत्पादन बढ़ाएंगे।

बुंदेलखंड में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के कारण भूमि में रासायनिक उर्वरकों विशेषकर यूरिया के लगातार इस्तेमाल से सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। किसानों द्वारा सूक्ष्म पोषक तत्वों का लगभग नगण्य उपयोग करने के कारण कुछ वर्षों से भूमि में इनकी कमी के लक्षण पौधों में दिखाई दे रहे हैं। इनकी कमी से फसल, फल, सब्जियों की पैदावार और गुणवत्ता घट जाती है। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने सूक्ष्म पोषक तत्वों की खोज करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान को अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना का प्रस्ताव बनाकर भेजा था। अब आईसीआर ने परियोजना को मंजूरी दे दी है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि परियोजना को मंजूरी मिलने से अब वैज्ञानिक बुंदेलखंड की मिट्टी पर शोध करेंगे, जिससे मिट्टी की जरूरत के मुताबिक पोषक तत्वों को पूरा करके फसलों की पैदावार बढ़ाई जा सकेगी।

17 मुख्य पोषक तत्वों की जरूरत

किसी भी पौधे को 17 मुख्य पोषक तत्वों की जरूरत होती है, इनमें नौ बहुल और आठ सूक्ष्म पोषक तत्व हैं। किसी भी तत्व की कमी होने से उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। किसानों को समय-समय पर मृदा परीक्षण कराकर पोषक तत्वों की जानकारी करनी चाहिए। बुंदेलखंड के किसान तिलहनी फसलों में द्वितीयक पोषक तत्व सल्फर देकर पेड़ की उपज बढ़ा सकते हैं। फसल के अवशेषों को किसी भी दशा में न जलाकर बायो कंपोस्ट बनाना चाहिए।

-प्रो. अरविंद कुमार, कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी।

जिंक, बोरान कम

मौजूदा समय में बुंदेलखंड की मिट्टी में जिंक, बोरान की कमी है। जिंक एंजाइम (विशेष कार्बनिक उत्प्रेरक) का मुख्य अवयव होता है। साथ ही प्रकाश संश्लेषण और नाइट्रोजन के पाचन में सहायक होता है। जिंक की कमी से पौधों की बढ़वार रुकने, पत्तियां मुड़ने व तने की लंबाई घटने की समस्या और धान में खैरा नामक बीमारी हो जाती है। साथ ही आम, नीबू और लीची में लिटिल लीफ (बंझा रोग) और सेब, आड़ू में रोजेट की समस्या हो जाती है। वहीं, बोरान दलहनी फसलों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली ग्रंथियों के निर्माण में सहायक होता है। पौधों के द्वारा जल शोषण को नियंत्रित करता है। बोरान की कमी से पत्तियां मोटी होकर मुड़ जाती हैं। आम में आंतरिक सड़न, आंवला में फल सड़न, चुकंदर में आंतरिक गलन, फूलगोभी में भूरापन व आलू की पत्तियों में स्थूलन हो जाता है।

29/01/2018

बुंदेलखंड के लिए ईजाद होगी सरसों की नई प्रजाति

कम पानी में अधिक उत्पादन मिलेगा, अप्रैल से वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ शुरू करेंगे शोध, कृषि विश्वविद्यालय को मिला जिम्मा

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी।

देश-विदेश की सरसों की उन्नत किस्मों की मदद से बुंदेलखंड के लिए नई प्रजाति ईजाद की जाएगी। प्रजाति की खासियत ये होगी कि वह कम पानी में अधिक उपज देगी। इसको तैयार करने का जिम्मा भारतीय कृषि अनुसंधान ने अखिल भारतीय समन्वित सरसों शोध परियोजना के तहत रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को दिया है। अप्रैल से वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ प्रजाति की खोज के लिए शोध कार्य शुरू करेंगे।

बुंदेलखंड को सरसों का हब बनाने के लिए कृषि विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है। भरतपुर के राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय से बुंदेलखंड की भौगोलिक दृष्टि को मद्देनजर रखते हुए पिछले दो साल से उन्नत बीज मंगवाए जा रहे हैं।

इसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं। जिन किसानों को उन्नत बीज दिए गए हैं, उनके यहां डेढ़ गुना सरसों का उत्पादन हुआ है। किसानों को प्रति हेक्टेयर आठ हजार रुपये का मुनाफा हुआ है। अब भारतीय कृ षि अनुसंधान ने केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय समन्वित सरसों शोध परियोजना पर काम करने के लिए मंजूरी दे दी है। इसके अंतर्गत वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर बुंदेलखंड में सरसों की उपज बढ़ाने पर शोध करेंगे। परियोजना का नोडल केंद्र राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय को बनाया गया है।

कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि देश-विदेश (कनाडा, चाइना, ऑस्ट्रेलिया आदि) से सरसों के उन्नत बीज मंगवाकर नई प्रजाति तैयार करवाई जाएगी। ताकि बुंदेलखंड में सरसों की उपज बढ़ सके। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि सरसों की फसल एक सिंचाई में भी फलफूल उठती है। बुंदेलखंड में वैसे भी पानी की काफी कमी है।

खास खबर

अप्रैल से वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ प्रजाति की खोज के लिए शुरू करेंगे शोध'

अधिकतर दस क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार

बुंदेलखंड में सरसों की अधिकतर पैदावार दस क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जो कि काफी कम है। अधिकांश किसान तो सात-आठ क्विंटल प्रति हेक्टेयर ही उपज निकाल पाते हैं। कुलपति ने कहा कि उपज दोगुनी करने का प्रयास है। उत्पादकता बढ़ेगी तो तेल उद्योग स्थापित होंगे, इससे बुंदेलखंड के युवाओं को रोजगार भी मिलेगा।

उन्नत किस्म के पैदावार की ये होगी विशेषता

- कम लागत में खरीद सकेंगे
- रोग रहित व रोग प्रतिरोधकता होगी
- सूखा सहन करने की प्रजाति होगी
- अधिक गुणवत्तापूर्ण होगी

स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है तेल

सरसों के तेल में ओमेगा तीन और छह उचित अनुपात में होता है। यह खासकर हृदय रोगियों के लिए स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। केमिकल के जरिए तेल को रिफाइंड करने से इसमें कुछ अंश रह जाते हैं, जो कि स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं।

मधुमक्खी पालन को मिलेगा बढ़ावा

मधुमक्खी पीले रंग की ओर आकर्षित होती है। ऐसे में सरसों की अधिक खेती होने से मधुमक्खी पालन को बढ़ावा मिल सकता है। सरसों का शहद बहुत उपयोगी होता है। मधुमक्खी के सरसों के पौधे से दूसरी फसल में बैठने से परागण होगा। इससे दूसरे पौधे की उपज भी बढ़ेगी।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

कम समय में पाएं मूंग का 'विराट' उत्पादन

खाली खेत न छोड़कर किसान नई किस्म की बुवाई कर ले सकते फायदा

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। 5/2/2018

मूंग की फसल का सीजन शुरू होने वाला है। इस बार मूंग की नई किस्म 'विराट' ईजाद हुई है। बुंदेलखंड के किसान 'विराट' की बुवाई करके ज्यादा उत्पादन पा सकते हैं। इसकी फसल अन्य फसलों की तुलना में एक सप्ताह पहले तैयार हो जाती है। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय कुछ किसानों को यह किस्म उपलब्ध कराएगा।

मूंग की फसल की बुवाई के लिए 15 फरवरी से 15 मार्च उपयुक्त समय होता है। केंद्रीय कृषि

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय कुछ किसानों को देगा बीज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि मूंग की फसल के लिए 'विराट' किस्म बहुत बेहतर है। 'विराट' के बीजों की बुवाई करने के बाद मूंग की फसल 60-65 दिनों में तैयार हो जाती है।

जबकि, अन्य फसलें एक सप्ताह का अधिक समय लेती हैं। इस किस्म से उत्पादन 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मिलता है, जो कि दूसरी फसलों की तुलना में अधिक है। जिन-जिन किसानों के खेत खाली

सलाह

सल्फर डालें तो अच्छी पैदावार

कुलपति ने किसानों को मूंग की फसल पर सल्फर डालने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से फसल को सल्फर दें। इससे अच्छी पैदावार मिलेगी।

हैं और सिंचाई के साधन हैं, वो मूंग की फसल लगाकर मुनाफा कमा सकते हैं। मूंग की फसल को तीन सिंचाई की जरूरत होती है। पहली सिंचाई बुवाई के 25वें दिन, दूसरी 35वें दिन और तीसरी 45वें दिन की जाती है।

झाँसी : राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर में उपस्थित कृषि वैज्ञानिक।

भोजला में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ

झाँसी : रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ग्राम भोजला में राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर का आज शुभारम्भ हुआ। शिविर में छात्र-छात्राओं को ग्रामीण परिवेश में रहकर गाँव समाज की व्यवस्था को जानने व समझने का अवसर प्राप्त हुआ। शिविर में डॉ. प्रभात तिवारी ने योग का प्रशिक्षण दिया। डॉ. आशुतोष शर्मा ने संचालन किया। इस दौरान कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. ऊषा, डॉ. एएस काले आदि उपस्थित रहे।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

वनों का वर्धन ही विश्व वानिकी दिवस का मुख्य आधार

- कृषि विवि के छात्र-छात्राओं ने रैली निकालकर लोगों को जागरूक किया

झाँसी : रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विश्व वानिकी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के तौर पर सहायक वन संरक्षक एके मालवीय, शिवनाथ सिंह व विवि के कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम विवि परिसर में पौधा रोपण किया गया, इसके बाद विवि के छात्र-छात्राओं द्वारा बनाये गये चित्र पटल का प्रदर्शन किया गया। छात्र-छात्राओं ने कविता, भाषण व नाट्य के माध्यम से वन के महत्व की जानकारी दी। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि जलवायु से सम्बन्धित समस्याओं के निवारण में वनों की अहम भूमिका है। वन लोगों के जीवीकोपार्जन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। सबसे एक सुर में कहा कि वनों का वर्धन की विश्व वानिकी दिवस का मुख्य आधार है। इस मौके पर डॉ. मीनाक्षी आर्य, डॉ. प्रिंस कुमार, डॉ. एएस काले, डॉ. शिखा ठाकुर, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. सीडी मिश्रा, डॉ. अमित जैन आदि उपस्थित रहे। संचालन डॉ. आशुतोष शर्मा व डॉ. प्रभात तिवारी ने संयुक्त रूप से व आभार प्रदर्शन डॉ. पंकज लवानिया ने किया।

■ राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत आज ग्राम भोजला में छात्र-छात्राओं ने पौधा रोपण किया व जागरूकता रैली निकालकर लोगों से वन संरक्षण की अपील की।

■ राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई राजकीय पॉलिटेक्निक द्वारा आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन लहरगिर्द में किया गया। शिविर का उद्घाटन प्रधानाचार्य जेएल वर्मा ने किया। शिविर में शामिल छात्रों ने लोगों से कुरीतियों से दूर रहने की अपील की। कार्यक्रम अधिकारी राजेन्द्र सिंह ने आभार व्यक्त किया।

जागरण 75 वर्ष 1942 2018

5

दैनिक जागरण

झाँसी, 12 अप्रैल, 2018

सरसों डबल, अब आय पर फोकस

- सरसों अनुसन्धान निदेशालय, भरतपुर के वैज्ञानिकों ने देखी ग्राउण्ड रिऐलिटि
- 1 एकड़ में हुई औसतन 10 क्विण्टल सरसों
- 75 किसानों को दिये गये थे उन्नत किस्म के बीज, पैदावार बढ़ने से किसान खुश

किसानों के साथ उपस्थित अनुसन्धान केन्द्र भरतपुर के वैज्ञानिक

झाँसी : किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयास को रानी लक्ष्मीबाई कृषि विश्वविद्यालय का प्रयोग सफल होने से बल मिला है। बुन्देलखण्ड में सरसों की पैदावार बढ़ाने के लिए उन्नत किस्म के जिन बीजों का प्रयोग किया गया था, उन्होंने सरसों की पैदावार दोगुनी कर दी है। आज ग्राउण्ड रिऐलिटि चेक करने निदेशालय से आए वैज्ञानिकों ने भी इस पर मोहर लगा दी।

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द ने सबसे पहले सरसों पर फोकस किया, क्योंकि बुन्देलखण्ड की सरसों में काफी सम्भावनाएँ हैं। इसके लिए पहले ऐसे किसानों का चयन किया गय़ा था, जो प्रयोग करने से न हिचकें। कंचनपुर, निवाड़ी, सारमऊ व ओरछा से 75 ऐसे ही किसान चिह्नित किये गये। इन किसानों को भरतपुर से मँगाये गये उन्नत प्रजाति के अलग-अलग बीज दिये गये। कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों का मार्गदर्शन करते रहे, तो फ़सल भी अपनी निगरानी में रखी। विश्वविद्यालय ने पहले ही दावा कर दिया था कि सरसों की पैदावार सामान्य से दोगुनी हो सकती है। रिपोर्ट भी कुछ ऐसी ही आयी। आज अनुसन्धान निदेशालय, भरतपुर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार व मुख्य तकनीकि अधिकारी डॉ. आरसी सचान की एक टीम किसानों से फीड बैक लेने आयी। टीम ने किसानों की फ़सल देखी और नये बीजों से खेती करने के अनुभव जाने। किसानों ने बताया कि पहले जहाँ 1 एकड़ में लगभग 5 क्विण्टल सरसों की पैदावार हो रही थी, उन्नत बीजों से बढ़कर औसत 10 क्विण्टल हुई है। जो बीज सबसे अधिक सफल रहा, उसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अन्य किसानों को जोड़ा जाएगा। इस मौके पर कार्यक्रम प्रभारी डॉ. अंशुमान सिंह, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुशील कुमार सिंह, डॉ. अमित तोमर, डॉ. वैभव सिंह, डॉ. मनोज कुमार सिंह, डॉ. पंकज लवानिया आदि उपस्थित रहे। डॉ. आशुतोष शर्मा ने संचालन किया।

आय दोगुनी करने के लिए इण्डस्ट्री की दरकार

कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अनुसार सरसों की पैदावार बढ़ने से तो किसानों को फायदा होगा ही, इसका असल लाभ उन्हें तब होगा, जब बुन्देलखण्ड में सरसों के बीज से तेल निकालने वाले प्लाण्ट लगेंगे। अभी तक किसान सरसों को सिर्फ मण्डी में ही बेच पाते हैं, जहाँ बिचौलिये उनका हक़ मार लेते हैं। प्लाण्ट लगे होंगे, तो सीधे वहाँ आपूर्ति कर पाएंगे और उन्हें दाम भी कहीं अधिक मिलेगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि बुन्देलखण्ड में सरसों का जबरदस्त स्कोप है। यदि किसान नये तरीकों से कृषि करें, तो उनकी आय बढ़ सकती है। विश्वविद्यालय में स्थापित मस्टर्ड रिसर्च सेण्टर किसानों को जोड़ने का काम कर रहा है। जिन 75 किसानों की फसल की पैदावार बढ़ी है, उन्ही से अन्य किसानों को जागरूक कराया लाएगा।

TOP 10
MIT-WPU
MIT WORLD PEACE UNIVERSITY PUNE

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

अमर उजाला

झांसी बृहस्पतिवार, 12 अप्रैल 2018

सरसों की उन्नत खेती की जानकारी

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर राजस्थान के विशेषज्ञों की बैठक हुई।

बैठक में भरतपुर अनुसंधान के प्रधान वैज्ञानिक डा. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. विनोद कुमार और मुख्य तकनीकी अधिकारी डा. आरसी सचान ने कृषकों को उन्नत खेती और उससे होने वाले फायदों की जानकारी दी। उन्होंने सरसों की खेती के लिए बुंदेलखंड को उपयुक्त बताया। इस मौके पर डा. अंशुमन सिंह, डा. सुशील कुमार, डा. अमित तोमर मौजूद रहे।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

कृषि विश्वविद्यालय को मिला बहुउद्देश्यीय भवन

अमर उजाला ब्यूरो
झांसी।

रविवार को केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. पंजाब सिंह ने रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के भ्रमण के दौरान उन्होंने बहुउद्देश्यीय भवन का उद्घाटन किया।

कुलाधिपति के साथ आरकेडीएफ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. बीएन सिंह ने विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाएं, फार्म प्रक्षेत्र को देखा। साथ ही छात्र-छात्राओं से बातचीत कर विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में जाना। भ्रमण के दौरान कुलाधिपति ने आईजीएफआरआई और

कुलाधिपति डा. पंजाब सिंह ने किया उद्घाटन

सीएएफआरआई के निर्देशकों व विभागाध्यक्षों के साथ बैठक की। उन्होंने दोनों संस्थानों के वैज्ञानिकों से विश्वविद्यालय में चल रहे अध्यापन कार्य में सहयोग करने को कहा। कहा कि वह शोध कार्यों में विश्वविद्यालय में कार्यरत टीचिंग एसोसिएट का सहयोग लें।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की। इस मौके पर रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार, कुलसचिव डा. मुकेश श्रीवास्तव मौजूद रहे। संचालन डा. आशुतोष शर्मा ने किया।

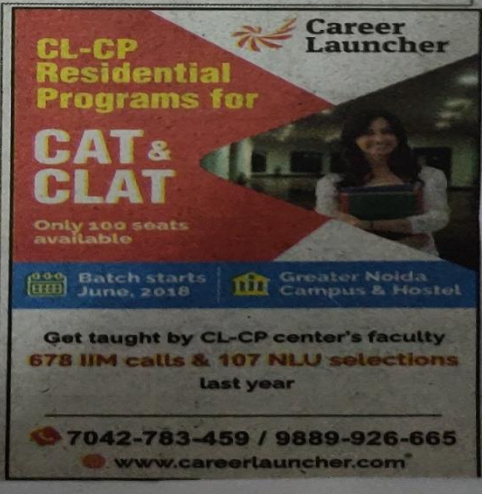

झाँसी : प्रगतिशील किसानों को बीज वितरित करते अतिथि।

कृषि क्षेत्र में रोज़गार की सम्भावनाएं

झाँसी : कुलाधिपति डॉ. पंजाब सिंह व प्रबन्ध निदेशक आरकेडीएफ ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूट डॉ. बीएन सिंह ने कृषि विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने विभिन्न प्रयोगशाला व कक्षाएं देखी तथा औषधीय, सुगन्धित व लाल चन्दन, रुद्राक्ष के पौधों का रोपण भी किया। कुलाधिपति ने वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को बुन्देलखण्ड के विकास

• कुलाधिपति ने किया कृषि विश्वविद्यालय का निरीक्षण

के लिए मिलकर काम करने को प्रेरित किया। विद्यार्थियों से कहा कि कृषि क्षेत्र में रोजगार के काफी अवसर हैं। बड़ागाँव एवं बबीना ब्लॉक के 40 प्रगतिशील किसानों को सरसों व चने का बीज वितरित किया गया। इस अवसर पर कुलसचिव मुकेश श्रीवास्तव, कार्यवाहक निदेशक रामनिवास, डॉ. आरवी कुमार, प्रमोद कुमारी राजपूत, डॉ. एसके शर्मा आदि उपस्थित रहे।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

22-05-2018

amarujala.com

अमर उजाला

दिसंबर में तैयार हो जाएगा भवन

कृषि विश्वविद्यालय प्रशासनिक, शैक्षिक, गर्ल्स हॉस्टल का 60 फीसदी काम पूरा

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी।

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के भवन का निर्माण तेजी से जारी है। साठ फीसदी काम हो चुका है। दिसंबर तक निर्माण पूरा करने की तैयारी है। इस पर एक अरब रुपये से अधिक की लागत आएगी।

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना को चार साल से अधिक समय हो चुका है। शुरुआत से ही विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन और कक्षाओं का संचालन (भारतीय चारागाह एवं चार अनुसंधान संस्थान) आईजीएफआरआई के पुराने भवन में किया जा रहा है। एक अरब रुपये से अधिक की लागत से बनने वाले इसके प्रशासनिक व शैक्षिक भवन तथा गर्ल्स हॉस्टल का निर्माण 12 नवंबर 2017 को शुरू किया गया था। निर्माण कार्य नेशनल बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन (एनबीसीसी) द्वारा किया जा रहा है। अब तक साठ फीसदी निर्माण हो चुका है। भवनों का स्ट्रक्चर तैयार हो गया है। बचा हुआ काम दिसंबर 2018 तक पूरा करने की तैयारी है।

बढ़ जाएंगे कोर्स

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में वर्तमान में बीएससी एग्रीकल्चर, हॉर्टिकल्चर और फोरेस्ट्री के कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। भवन निर्माण पूरा होने के बाद विश्वविद्यालय में परास्नातक कक्षाएं भी संचालित की जाने लगेंगी।

बाउंड्रीवाल की जगह बायो फेंसिंग

तीन सौ एकड़ क्षेत्रफल में फैले केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में बाउंड्रीवाल का निर्माण नहीं किया जाएगा। इसकी जगह बायो फैंसिंग की जाएगी। बांस और करौंदे के पेड़ यहां लगाए जाएंगे। बुंदेलखंड का वातावरण बांस और करौंदे के लिए उपयुक्त माना जाता है।

एक अरब से अधिक आएगी लागत

निर्माण की गति संतोषजनक

विश्वविद्यालय के भवनों के निर्माण की गति संतोषजनक स्थिति में है। दिसंबर तक हर हाल में निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा। इसके बाद कोर्सों का भी विस्तार होगा। इससे क्षेत्र के लोगों को खासा लाभ होगा। इसके अलावा बायो फैंसिंग को लोग अपने खेतों में भी अपना सकते हैं। बांस और करौंदा के लिए यहां का वातावरण एकदम उपयुक्त है। – प्रो. अरविंद कुमार, कुलपति

प्रवेश के लिए आवेदन शुरू

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है। इंटरमीडिएट पास अभ्यर्थी स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन 31 मई किए जा सकते हैं। आवेदन www.icar.org.in पर किए जा सकते हैं। इस साइट पर जाने के बाद एजूकेशन डिवीजन का लिंक मिल जाएगा। इस पर आवेदन किया जा सकता है। स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए 23 जून को प्रवेश परीक्षा होगी। जबकि, देश के अन्य विश्वविद्यालयों की परास्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए 22 जून को प्रवेश परीक्षा होगी।

कृषि विवि को मिले दो डीन, दो निदेशक

अमर उजाला 20 जून 2018

चार सालों से खाली चल रहे थे पद

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दो डीन और दो डायरेक्टर की नियुक्ति हो गई है। पिछले चार सालों से यह पद खाली चल रहे थे। जल्द ही सभी अधिकारी ज्वाइन कर लेंगे।

वर्ष 2014 में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की शुरूआत हुई थी। इसके बाद से यहां कृषि और हॉर्टीकल्चर एंड फॉरेस्ट्री विभाग का डीन, शोध और शिक्षा निदेशक का पद खाली चल रहा था। कुलसचिव इनके कार्य देख रहे थे। हाल ही में हुए इन पदों पर साक्षात्कार के बाद चारों अधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है। कानपुर के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पल्स रिसर्च (आईआईपीआर) में जेनेटिक्स विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके चतुर्वेदी को कृषि विभाग का डीन बनाया गया है।

इंफाल के कृषि विश्वविद्यालय के डॉ. एके पांडेय को हॉर्टीकल्चर एंड फॉरेस्ट्री विभाग का डीन नियुक्त किया गया है। नई दिल्ली के आईएआरआई के वैज्ञानिक डॉ. एनआर शर्मा को शोध निदेशक और पंत नगर विश्वविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार को शिक्षा निदेशक बनाया गया है। अभी प्रसार निदेशक पद पर किसी की नियुक्ति नहीं हो सकी है, क्योंकि साक्षात्कार के दौरान कोई योग्य नहीं मिला। कुलसचिव मुकेश श्रीवास्तव ने कहा कि चार नए अधिकारियों के आने से विश्वविद्यालय को गति मिलेगी।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

अमर उजाला | झांसी | सोमवार, 9 जुलाई 2018 | 6

अभी करें खरीफ की बुवाई, होगा फायदा

सामान्य मानसूनी बारिश से मिल गई भूमि को पर्याप्त नमी, कम अथवा ज्यादा पानी दोनों में बेहतर होता तिल उत्पादन

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी शहर से सटे ग्राम सिमरधा में खरीफ की फसल के लिए तैयार होते खेत।

झांसी। दो सप्ताह में हुई बारिश से भूमि में पर्याप्त नमी आ गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह समय किसानों के लिए भूमि की तैयारी और खरीफ फसलों की बुवाई करने के लिए उपयुक्त है। किसान यदि अभी खरीफ की बुवाई करते हैं तो उन्हें अच्छा उत्पादन मिलेगा।

बुंदेलखंड में खेती करने में आ रही समस्याओं का प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग और वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाकर सामना किया जा सकता है। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि खरीफ में होने वाली फसलें जैसे मूंग, उड़द, तिल और मूंगफली की बुवाई के लिए जमीन की तैयारी करने का यह सही समय है। तिल की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि तिल कम और ज्यादा पानी दोनों ही परिस्थितियों के लिए बेहतर फसल है। इसके लिए सबसे पहले मिट्टी की जुताई कर भुरभुरा कर लें। मृदा उपचार के लिए फोरेट10-जी पांच किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। तिल की बुवाई 15 से 20 जुलाई तक अवश्य कर लें, ताकि रबी की फसलों की बुवाई समय से की जा सके। बीज को ठीक तरह से उपचारित करने के लिए बाबिस्टीन की दो ग्राम प्रति किलो बीज में मिलाएं।

उन्होंने जैविक खाद पर जोर देते हुए कहा कि किसान खेतों में गोबर की खाद 10 से 15 टन प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें। बीज एवं गोबर की खाद का अनुपात 1:20 रखने से सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। जो किसान रबी में फसल लेते हैं या खेत को खाली छोड़ देते हैं, उन्हें खेतों में हरी खाद के रूप में ढेंचा का प्रयोग करना चाहिए। इससे खेतों में जीवांश की मात्रा बढ़ने के साथ पैदावार अच्छी होती है। तिल की प्रमुख प्रजातियां जैसे आरटी- 351, शेखर, प्रगति और तरुण उत्पादन के लिए अच्छी हैं।

पिछले साल किसानों ने विश्वविद्यालय के प्रथम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत उन्नत किस्म एवं वैज्ञानिक विधि से विकसित तिल में 37.8 प्रतिशत की पैदावार में वृद्धि हासिल की।

तिल के अलावा मूंग, उड़द, मूंगफली का भी अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। बेहतर उत्पादन के लिए फसलों की समय पर बुवाई व सहफसली प्रणालियों को अपनाना लाभदायक है। फसलों को देर से बोने पर बीमारियां होने से उत्पादन प्रभावित होता है।

तिल में उर्वरकों के प्रयोग के लिए वर्षा आधारित स्थानों पर 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर एवं 20 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिए। मूंगफली के लिए 250 किलोग्राम जिप्सम व चार किलोग्राम बोरडेक्स प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने से निश्चित फायदा होगा।

चटख धूप उड़ा रही खेतों की नमी

गरौठा। जुलाई का पहला हफ्ता भी बीत चुका है और आसमान से अब तक झूमकर बारिश नहीं गिरी है। जून में दो से तीन दफा प्री-मानसून की बारिश जरूर हुई, लेकिन इसके बाद से क्षेत्र में बादल तो आए, पर बरसे नहीं। हवा उन्हें अपने साथ उड़ा ले जाती है। मॉनसून की इस बेरुखी ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। दरअसल, यह खरीफ की बुवाई का सही समय माना जाता है। कुछ किसानों ने शुरुआती बारिश को देखकर खेतों में बीज बो दिए थे, पर वह अब असमंजस में है।

अमर उजाला | amarujala.com | झांसी | शनिवार, 14 जुलाई 2018 | 9

सितंबर में तैयार होगा छात्रावास

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की छात्राओं को इसी सत्र से मिलेगी सुविधा

अमर उजाला ब्यूरो

पुरुष छात्रावास का निर्माण कार्य भी जल्द शुरू होगा

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में एडमीशन लेने वाली छात्राओं को इसी सत्र से छात्रावास में रहने की सुविधा मिल जाएगी। महिला छात्रावास का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है, जो सितंबर तक पूरा हो जाएगा। यहां पुरुष छात्रावास भी स्वीकृत हो चुका है, जिसका काम जल्द शुरू होगा।

2014 में रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कक्षाएं शुरू हुई थी। शुरुआती दौर में ग्रासलैंड में ही इसकी कक्षाएं चली थी, लेकिन अब इसकी अलग बिल्डिंग तैयार हो चुकी है। अब यहां पढ़ने वाले छात्रों को तमाम सुविधाएं देने की तैयारी चल रही है। इस वर्ष की शुरुआत में यहां [illegible] शुरू हो गया था। चार मंजिला बनने वाले इस छात्रावास में पचास कमरों में छात्राएं रहेंगी। एक कमरे में तीन छात्राओं के रुकने की व्यवस्था होगी। उनकी सुविधा के लिए इस भवन में लिफ्ट भी लगाई जाएगी। भूतल में कैफेटेरिया बनाया जाएगा। विश्वविद्यालय प्रशासन की योजना भविष्य में इसके और विस्तार की भी है।

छात्रावास का काम पूरा होने के बाद इसके पास ही पुरुष छात्रावास भी बनाया जाएगा। इसमें दो सौ छात्रों के रहने की व्यवस्था होगी। इसे भी चार मंजिला बनाया जाएगा। शासन से इसकी स्वीकृति मिल चुकी है और बजट भी पास हो गया है। जल्द ही इसका काम शुरू होने की उम्मीद है।

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय प्रशासन छात्र-छात्राओं को अच्छी व्यवस्थाएं देना चाहता है। महिला छात्रावास में इसी सत्र से छात्राओं को कमरे मिल जाएंगे और पुरुष छात्रावास के कमरे छात्राओं के लिए अगले सत्र से आवंटित होने लगेंगे।

ot on OnePlus

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

amarujala.com

झांसी
शुक्रवार, 20 जुलाई 2018

तिल, सोयाबीन व उड़द की करें बुवाई

झांसी। जिले में बृहस्पतिवार को झमाझम बारिश होने और आगे भी स्थिति बेहतर रहने के पूर्वानुमान के चलते यह समय तिल, सोयाबीन, उड़द और मूंगफली की बुवाई के लिए उपयुक्त है। किसानों को बरसात के पानी के संचयन की व्यवस्था तुरंत कर लेनी चाहिए।

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी चार-पांच दिन बरसात की संभावना है। फसलों में जलभराव रोकने के लिए किसानों को बेहतर जल निकास की व्यवस्था करना जरूरी है। भविष्य में सिंचाई को पानी की कमी न हो पाए, इसलिए बारिश के जल का संचयन करने के लिए तालाबों की तरफ जाने वाली नालियों की सफाई करें। खेत में ही बड़ा गड्ढा करके पानी एकत्र करें। यह समय तिल, सोयाबीन, उड़द आदि की बुवाई के लिए सही है।

झाँसी : केन्द्रीय कृषि विवि में उपस्थित मण्डलायुक्त व अन्य।

केन्द्रीय कृषि विवि में स्वास्थ्य परीक्षण व पौधारोपण सम्पन्न

झाँसी : रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में अपर निदेशक (स्वास्थ्य) एसबी मिश्रा व विभिन्न चिकित्सकों की टीम द्वारा अधिकारी, कर्मचारी व छात्रों के स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया। इस अवसर पर समीपवर्ती गाँवों के व्यक्तियों ने भी स्वास्थ्य का परीक्षण कराया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मण्डलायुक्त कुमुदलता श्रीवास्तव ने दैनिक कार्यकलापों में स्वच्छता को शामिल करते हुए दिनचर्या में आवश्यक बदलाव करने की बात कही। अध्यक्षता करते हुये कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने कहा कि सामूहिक स्वास्थ्य शिविर से एक साथ विभिन्न रोगों की जाँच करने में मदद मिलती है। इस दौरान अतिथियों के साथ अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. एसके चतुर्वेदी, अधिष्ठाता उद्यानिकी व वानिकी संकाय डॉ. एके पाण्डेय, निदेशक अनुसन्धान डॉ. एआर शर्मा, निदेशक शिक्षा डॉ. अनिल कुमार आदि ने पौधारोपण किया। कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

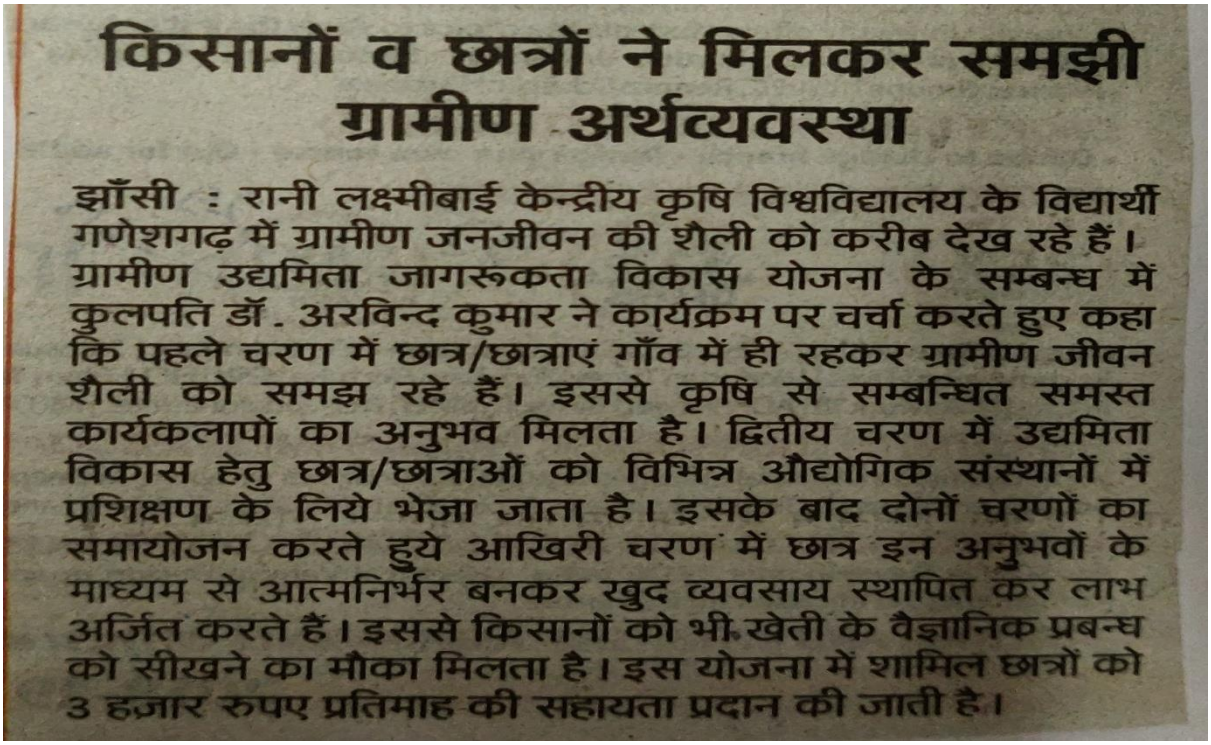

किसानों व छात्रों ने मिलकर समझी ग्रामीण अर्थव्यवस्था

झाँसी : रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी गणेशगढ़ में ग्रामीण जनजीवन की शैली को करीब देख रहे हैं। ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता विकास योजना के सम्बन्ध में कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने कार्यक्रम पर चर्चा करते हुए कहा कि पहले चरण में छात्र/छात्राएं गाँव में ही रहकर ग्रामीण जीवन शैली को समझ रहे हैं। इससे कृषि से सम्बन्धित समस्त कार्यकलापों का अनुभव मिलता है। द्वितीय चरण में उद्यमिता विकास हेतु छात्र/छात्राओं को विभिन्न औद्योगिक संस्थानों में प्रशिक्षण के लिये भेजा जाता है। इसके बाद दोनों चरणों का समायोजन करते हुये आखिरी चरण में छात्र इन अनुभवों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनकर खुद व्यवसाय स्थापित कर लाभ अर्जित करते हैं। इससे किसानों को भी खेती के वैज्ञानिक प्रबन्ध को सीखने का मौका मिलता है। इस योजना में शामिल छात्रों को 3 हज़ार रुपए प्रतिमाह की सहायता प्रदान की जाती है।

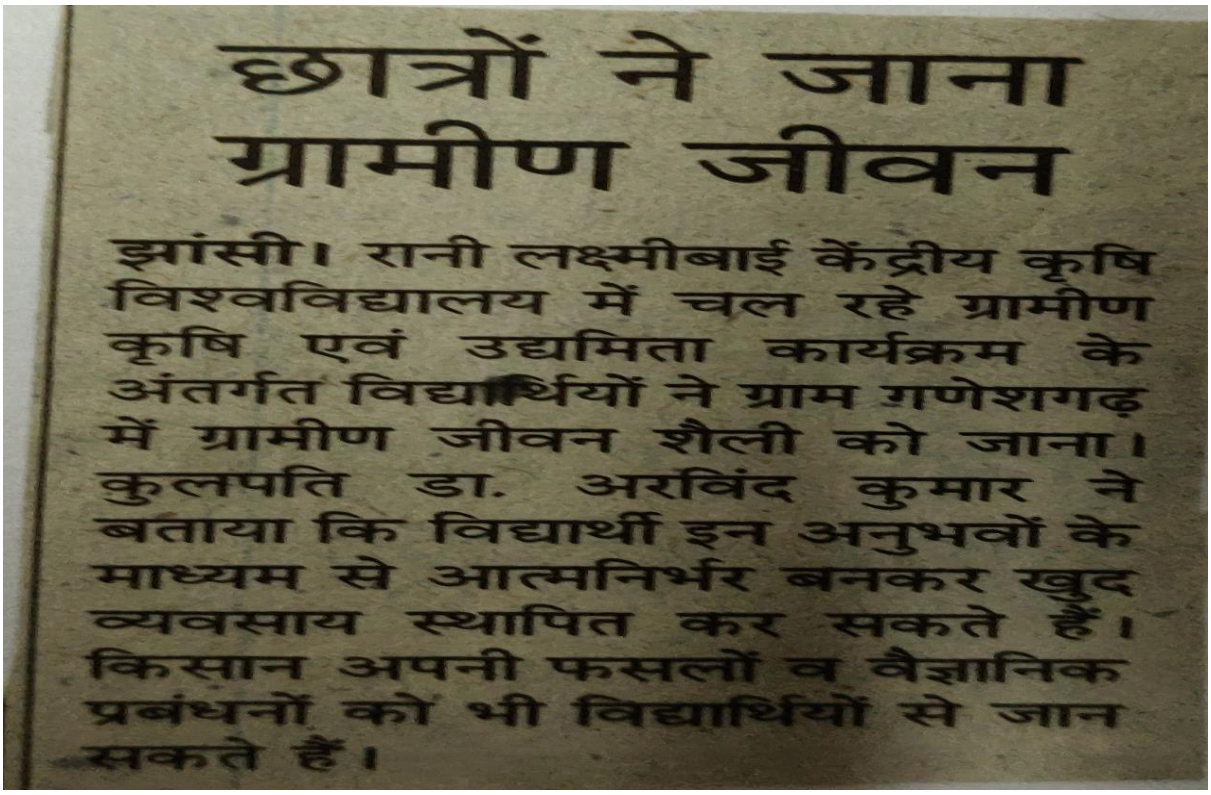

छात्रों ने जाना ग्रामीण जीवन

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे ग्रामीण कृषि एवं उद्यमिता कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों ने ग्राम गणेशगढ़ में ग्रामीण जीवन शैली को जाना। कुलपति डा. अरविंद कुमार ने बताया कि विद्यार्थी इन अनुभवों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनकर खुद व्यवसाय स्थापित कर सकते हैं। किसान अपनी फसलों व वैज्ञानिक प्रबंधनों को भी विद्यार्थियों से जान सकते हैं।

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

प्राइमरी कक्षाओं से होगी कृषि की पढ़ाई

कानपुर। कृषि को बढ़ावा देने के लिए अब देशभर में प्राइमरी कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को कृषि शिक्षा दिए जाने की तैयारी है। इससे विद्यार्थियों में शुरू से ही कृषि शिक्षा के प्रति दिलचस्पी पैदा होगी और भविष्य में अच्छे कृषि विशेषज्ञ तैयार हो सकेंगे। बुधवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में हुए कुलपति सम्मेलन में आए देशभर के कुलपतियों ने इस पर सहमति दी है। भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ जल्द ही केंद्र सरकार व सभी प्रदेश सरकारों को प्रस्ताव भेजेगा।

सम्मेलन में आए 27 कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति इस बात पर सहमत नजर आए कि कृषि व्यवस्था में तभी सुधार होगा जब बचपन से ही छात्र कृषि के बारे में जानकारी हासिल करेंगे। भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ के सचिव डॉ. आरपी सिंह ने सम्मेलन में आए कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही से मिलकर उत्तर प्रदेश में यह व्यवस्था जल्द शुरू कराने की मांग भी की। इस दौरान चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुशील सोलोमन, प्रो. एनसी पटेल, प्रो. आरपी सिंह, प्रो. अरविंद कुमार आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

कानपुर में हुए कुलपति सम्मेलन में उपस्थित राज्यपाल राम नाईक व अन्य।

कुलपतियों का सम्मेलन

अटलजी जी के शैक्षिक दस्तावेज जल्द खोजे जाएंगे : राम नाईक

कानपुर। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के शैक्षिक दस्तावेज खोजने का ऐलान राज्य विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति राज्यपाल राम नाईक ने भी कर दिया है। राज्यपाल ने कहा कि वह आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति से बात करेंगे। 'अमर उजाला' ने अटलजी के दस्तावेज गायब होने का खुलासा किया था।

राज्यपाल ने बुधवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति सम्मेलन का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा, वाजपेयी विराट व्यक्तित्व के धनी थे। उनका कानपुर से बेहद खास रिश्ता था। उन्होंने यहीं के कॉलेज और गलियों से राष्ट्रवाद व राष्ट्रभक्ति सीखी थी। कानपुर ने ही उन्हें राजनीति का पाठ भी पढ़ाया। ब्यूरो

अमर उजाला | झांसी | amarujala.com | झांसी | रविवार, 30 सितंबर 2018

'स्वच्छता के दूतों' का किया गया सम्मान

उत्तर प्रदेश सरकार और अमर उजाला के 'स्वच्छता जागरुकता पहल' अभियान के तहत हुआ समारोह

गांव-गांव स्वच्छता की अलख जलाने वालों को सम्मानित करते कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार। उनके दाएं हैं एपी त्रिपाठी, शालिगराम राय व बाएं हैं राजीव हिंगवासिया, संतोष।

उत्तर प्रदेश सरकार एवं अमर उजाला के संयुक्त प्रयास अभियान स्वच्छता जागरुकता पहल में सम्मानित किए गए गांव-गांव अलख जलाने वाले स्वच्छता दूत। साथ में हैं मुख्य अतिथि रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार उनके दायें हैं एपी त्रिपाठी।

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। उत्तर प्रदेश सरकार और अमर उजाला के संयुक्त प्रयास से जारी अभियान 'स्वच्छता जागरुकता पहल' के तहत शनिवार को सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें गांव - गांव में स्वच्छता की अलख जलाने वाले 62 लोगों का सम्मान हुआ। इस दौरान सम्मानित होने वाले [illegible] अ[illegible] श्री लक्ष्मी व्यायाम मंदिर के सभागार के आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने कहा कि स्वच्छता किसी भय के कारण नहीं अपनाई जा सकती है, बल्कि इसे जागरुकता से ही आत्मसात किया जा सकता है। स्वच्छता को हमारे जीवन को जीने के सलीके में शामिल होना चाहिए। पिछले दो वर्षों [illegible] को लेकर लोगों में जागरुकता बढ़ी है।

उत्तर प्रदेश सरकार एवं अमर उजाला का संयुक्त प्रयास

स्वच्छता जागरुकता पहल

अध्यक्षता करते हुए जिला पंचायत राज अधिकारी अष्ट प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सरकारी प्रयास से शुरू हुआ स्वच्छता का अभियान अब जन-जन का मिशन बनता जा रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने आजादी के आंदोलन के दौरान स्वच्छता का भी संदेश दिया था। बापू के इस संदेश को केंद्र और प्रदेश की वर्तमान सरकारों ने आगे बढ़ाने का काम किया है। इसमें 'अमर उजाला' जैसे मीडिया घराने का सहयोग मिलना बड़ी बात है। इसी का नतीजा है कि गांव-गांव में शौचालय का निर्माण हो रहा है और लोग सदियों पुरानी सोच को बदलकर खुले में शौच की जगह घर में बने शौचालय का प्रयोग करने लगे हैं। उन्होंने ग्राम प्रधान, ग्राम सचिवों, स्वच्छाग्राहियों को इस अभियान की धुरी बताया।

कार्यक्रम में जिला स्वच्छ भारत प्रेरक संतोष प्रजापति, स्वच्छ भारत मिशन के जिला संयोजक राजीव हिंगवासिया व बुंदेलखंड सेवा मंडल के महामंत्री शालिगराम राय प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) रहीस प्रसाद यादव ने किया।

ये हुए सम्मानित

समारोह में अब्दुल समद, त्रिलोकी नाथ अग्रवाल, प्रेमकुमारी बौद्ध, सोन, सत्येंद्र प्रताप, ओमप्रकाश, सतीश प्रसाद, हाकिम सिंह, राजेश कुमार, दिनेश चंद्र तिवारी, राकेश कुमार, मकरेंद्र सिंह, बिपिन झा, सुरेंद्र झा, स्वतंत्र सिंह, संदीप दुबे, राजेंद्र सिंह, बृजेंद्र सिंह, सत्यविजय प्रताप सिंह, रामप्रताप सिंह, कु. कृष्णा, कु. रानू, कु. सविता, प्रभुदयाल, सुल्तान, रजनी राय, खुमान, रामदेवी, उमाशंकर, भवानी सिंह, लखन सिंह, अवधेश राजपूत, नरेंद्र कुमार, सत्येंद्र कुमार, सियाराम, अमित, राधाबल्लभ नायक, रामपाल, अनीता, संतोष, राम नरेंद्र, कन्हैयालाल, अनिल कुमार, दीपेंद्र सिंह, बृजबिहारी, धर्मेंद्र कुमार, महिपत सिंह, गजेंद्र सिंह, सुमन, प्रदीप कुमार खरे, भूपेंद्र कुमार, पुष्पेंद्र कुमार, हुकुमचंद्र, जगदीश, कृष्णा, स्वामीशरण, पूजा, वर्षा, कौशल्या, लक्ष्मी, शकीला और रानी को सम्मानित किया गया।

Shot on OnePlus

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Press and Print Media – News

दैनिक जागरण — जागरण युवा गाथा Monday | जागरण ज़िन्दगी का एक पन्ना Tuesday | जागरण हक़ीक़त Wednesday | जागरण मेरा बाज़ार Thursday | जागरण किसान कथा Friday | जागरण कहानी कॉलोनी की Saturday | जागरण एक दिन Sunday

4

झाँसी, 3 सितम्बर 2018

युवाओं की 'ज़मीनी' मेहनत से सँवरेगी कृषि की सूरत

जागरण हेल्पलाइन

- आयुक्त : 9454417501
- आइजी (कानपुर) : 9454400142
- डीआइजी : 9454400210
- जिलाधिकारी : 9454417547
- एसएसपी : 9454400282
- अपर पुलिस अधीक्षक (नगर) : 94544001070
- पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) : 9454401069
- क्षेत्राधिकारी (नगर) : 9454401432
- क्षेत्राधिकारी (सदर) : 9454401433
- क्षेत्राधिकारी (टहरौली, यातायात, लाईन) : 9454401434
- क्षेत्राधिकारी (मऊरानीपुर) : 9454401435
- क्षेत्राधिकारी (मोंठ) : 9454401436
- क्षेत्राधिकारी (गरौठा) : 9454401437
- क्षेत्राधिकारी (क्राईम/कार्यालय) : 9454457871
- सहायक रेडियो अधिकारी : 9454404736
- प्रतिसार निरीक्षक : 9454402371
- निरीक्षक यातायात (एसआइ एमटी) : 9415439593

खेत में किसानों की मदद करते रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं।

देश में युवा शक्ति को रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। यही वह शक्ति है, जिसके कन्धे पर देश को आगे बढ़ाने व विकसित बनाने की ज़िम्मेदारी होती है। एक समय था कि युवाओं व बुजुर्गों के बीच जेनरेशन गैप था, बातचीत सीमित थी, सिर्फ बुजुर्ग ही युवाओं को दुनियादारी की समझ कराते थे - अब ऐसा नहीं है। आज के युवा हर मामले में आगे हैं। जेनरेशन गैप की इस खाई को पाट रहे हैं, तो सफलता व सामंजस्य की एक नई गाथा लिख रहे हैं। ये आज के युवा ही हैं, जो समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने लगे हैं। देश के लिए योगदान देने की ललक उनके अन्दर आ गयी है। युवाओं द्वारा किये गये ऐसे ही कई कार्यों के तमाम उदाहरण हमारे सामने हैं, जो सभी के लिए प्रेरणादायक हैं। युवाओं द्वारा की जा रही ऐसी ही अलग गतिविधियां रोचक भी हैं और प्रेरक भी। इन्हें अपने नये कॉलम 'युवा गाथा' में हम आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

- सम्पादक

स्कूल में बच्चों को समझाया जा रहा शिक्षा का महत्व

जागरण युवा गाथा

- हिमांशु वर्मा

- कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कर रहे गणेशगढ़ के किसानों की मदद
- किसानों के घर पर ही रहते हैं, ग्रामीण नौनिहालों को कर रहे शिक्षित
- किसानों ने इन्हें बच्चों की तरह अपनाया, लेते हैं आधुनिक कृषि के टिप्स

झाँसी : देश में अन्नदाता की हालत किसी से छिपी नहीं है। बदहाल हो रही कृषि देश के लिए चिन्ता का कारण बनी हुई है। यही कारण है कि भारत सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयास में जुटी है। अब सवाल है कि यह हो कैसे? व्यवहारिक बात यही है कि वैज्ञानिकों की लैब में हो रहे प्रयोग किसानों तक या तो पहुँचते नहीं हैं या फिर किसान इन्हें अपनाने के लिए तैयार नहीं होते। ऐसा भी होता है कि धरातल पर आते-आते ये प्रयोग धराशायी भी हो जाते हैं। ऐसे में कृषि की स्थिति खेत पर जाकर ही बदल सकती है, यह सब मानने लगे हैं। इसीलिए रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के छात्र अब अपनी शिक्षा का लाभ अन्नदाता को दिलाने के लिए खेत में उतर आये हैं। यूँ तो इसे यह कहा जा सकता है कि यह उनकी पढ़ाई का हिस्सा है, पर बबीना ब्लॉक के गणेशगढ़ गाँव में जो कुछ यह छात्र कर रहे हैं, वाकई यह किसानों का उत्साह बढ़ा रहा है।

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में बीएससी (कृषि) के अन्तिम वर्ष के हनुमान बेनीवाल, तबरेज अख़्तर, बसन्त, विकास, महफूज, शीना, नेहा, सोनल व उमा 3 हफ्ते की ट्रेनिंग के लिए गणेशगढ़ गाँव में ठहरे हैं। इस ट्रेनिंग प्रोग्रैम के को-ऑर्डिनेटर डॉ. आशुतोष शर्मा बताते हैं कि जब पहली बार गाँव पहुँचे, तो समझ नहीं आ रहा था कि छात्र-छात्राएं वहाँ कैसे रुक पाएंगे। किसानों से बात की, तो उन्होंने अपने घर पर रुकने का प्रस्ताव दे दिया। उनकी समस्या खत्म हो गयी, छात्र भी तैयार थे। बस फिर क्या था, युवाओं की टोली ने गाँव जाकर तस्वीर बदलने की शुरूआत कर दी। पहले तो छात्रों ने किसानों के साथ उनके खेतों पर जाना शुरू किया। वहाँ अपने शिक्षा व आधुनिक तकनीक व उन्नत कृषि के तौर-तरीकों से उनको रू-ब-रू कराया, फिर खेती की पुरानी समस्याएं जैसे उन्नत बीजों का उपयोग, कीटों से बचाव के तरीके आदि पर काम शुरू कर दिया। 1-2 दिन ही लगे कि ये छात्र-छात्राएं गाँव वालों से घुल-मिल गये, फिर उन्होंने एक अस्थाई किसान समाधान केन्द्र बना लिया। सुबह 2 घण्टे इस केन्द्र में किसानों का रिकॉर्ड तैयार किया जाता है। उनके मोबाइल फोन नम्बर आदि लिये जाते हैं, ताकि नये तौर-तरीके उन तक पहुँचाए जा सकें। इस केन्द्र में किसानों की समस्याएं सुनी जाती हैं, उन्हें सलाह दी जाती है।

छात्रों का मार्गदर्शन करते रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक

शाम को यूँ चौपाल में होता है मनोरंजन

बच्चों को कर रहे शिक्षित

ये युवा छात्र-छात्राएं सिर्फ अपनी ट्रेनिंग ही नहीं कर रहे, गाँव के बच्चों को पढ़ा रहे हैं और ग्रामीणों को शिक्षा का महत्व समझा रहे हैं। हाल ही में बच्चों को विश्वविद्यालय की ओर से स्टेशनरी का सामान वितरित किया गया। छात्र स्वच्छता के प्रति भी [illegible] जागरूक कर रहे हैं। [illegible] की उनकी बात समझ में [illegible] है।

रास आ गया गाँव

गाँव में ठहरे छात्रों का कहना है कि गाँव के लोग बहुत अच्छे हैं। बच्चों की तरह उनको अपनाया है। खाने से लेकर सोने तक की व्यवस्था ठीक उसी प्रकार करते हैं, जैसे अपने बच्चों की [illegible] है।

शाम को लगती है चौपाल

हर शाम ये छात्र गाँव में लगने वाली चौपाल में शामिल होते हैं। यहाँ तमाम विषयों पर चर्चा के साथ ही ढोलक [illegible] मनोरंजन भी करते हैं।

किसान भी हैं खुश

गाँव के किसान इन छात्रों के आ जाने से खुश हैं। उनका कहना है कि ये युवा कृषि की शिक्षा ले रहे हैं, इसलिए इनसे काफी मदद मिलती है।

पारम्परिक कृषि करने वालों को समझाते हैं कि क्या गलती कर रहे हैं, उस गलती से किस प्रकार का नुक़सान हो सकता है।

इन्होंने कहा

- विश्वविद्यालय किसानों की मदद के लिए हरसम्भव प्रयास करेगा। छात्रों की ट्रेनिंग गाँव में ही होने से ग्रामीणों को निश्चित तौर पर लाभ होगा। यह और अच्छा कैसे हो सकता है, इस सम्बन्ध में विचार किया जा रहा है। विश्वविद्यालय किसानों के काम आए, यही इसका उद्देश्य है।
  - डॉ. अरविन्द, कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
- छात्रों का मन भी गाँव में लग रहा है, यह बहुत अच्छा है। किसानों की जितनी मदद हो सकती है, उतना छात्र कर रहे हैं। छात्र-छात्राओं की मदद के लिए रोज विश्वविद्यालय से एक वैज्ञानिक गाँव पहुँचते हैं। उपयोगी कार्यक्रम है।
  - डॉ. आशुतोष शर्मा, प्रोग्रैम को-ऑर्डिनेटर व वैज्ञानिक
- इन बच्चों से काफी मदद मिल रही है। खेत पर साथ जाते हैं और मेहनत भी करते हैं। इनका आगमन हमारे लिए उपयोगी है।
  - जमुना प्रसाद, किसान
- छात्र स्कूल में नियमित आते है और बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करते हैं। इसका असर हो रहा है। यह हमारे व बच्चों के भविष्य के लिए अच्छा है।
  - वीरसिंह, किसान
- यह एक अच्छा तरीका साबित हो सकता है। इस माध्यम से हम तक कृषि सम्बन्धी आधुनिक जानकारी पहुँच रही है। हमारे मोबाइल फोन नम्बर ले लिये हैं, ताकि आगे भी जानकारी मिलती रहे।
  - कौशल्या देवी राजपूत, किसान

Shot on OnePlus
By Dr. Ashutosh Sharma